दीपावली पर आंतरिक सफाई और नये साल की योजना

राजयोगी ब्र.कु. [illegible] भाई

दीपावली का पर्व केवल घरों को रोशनी और सजावट से भरने का अवसर नहीं है बल्कि यह भीतर की धूल हटाकर आत्मा को उज्जवल करने की प्रेरणा भी देता है। परमात्मा द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के अनुसार असली सफाई केवल बाहर की दीवारों या वस्त्रों तक सीमित नहीं होती, बल्कि विचारों, संस्कारों और सम्बन्धों की धूल हटाना ही सच्चा शुद्धिकरण है।

जब हम दीपावली के अवसर पर झाड़ू-पोंछा करके घर को चमकाते हैं, तो यह हमें याद दिलाता है कि मन की गहराई में जमी हुई नकारात्मकता, आलस्य, ईर्ष्या, नफरत, घृणा और क्रोध की परतों को भी हटाना जरूरी है। जिस प्रकार अन्धेरे कमरे में दीपक जलाते ही प्रकाश फैल जाता है, उसी प्रकार आत्मा रूपी दीपक में परमात्मा की स्मृति का तेल भरकर हम भीतर की अन्धकारमय प्रवृत्तियों को दूर कर सकते हैं। यह आन्तरिक दीपावली ही वास्तविक उत्सव है।

नये वर्ष का आरम्भ दीपावली के साथ ही होता है। यह हमें संकेत देता है कि केवल कैलेंडर बदलने से जीवन नहीं बदलता, बल्कि हमें संकल्प बदलने की आवश्यकता है। यदि हम नये वर्ष में शुद्ध विचारों, सकारात्मक दृष्टिकोण और श्रेष्ठ कर्म करने का संकल्प लें तो जीवन स्वतः ही नए रंगों से भर उठेगा।

परमात्मा हमें सिखाते हैं कि संकल्प ही सृष्टि का बीज है। जैसा बीज होगा वैसा ही वातावरण और परिणाम मिलेगा।

अक्सर लोग नए साल पर बड़े-बड़े लक्ष्य बनाते हैं, परंतु उसका आधार कमजोर होता है। सच्ची योजना यह है कि पहले आत्मा को शक्तिशाली बनाया जाए, नियमित राजयोग मेडिटेशन, सात्विक आहार और अच्छे संस्कारों का अभ्यास आत्मा को बल देता है। जब आत्मा मजबूत होती है तो निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है और लक्ष्य पाने की शक्ति भी सहज ही मिल जाती है।

इस दीपावली पर हम यह प्रण लें कि केवल बाहर के दीप जलाने तक ही सीमित न रहें, बल्कि अपने अंतर्मन में भी दिव्यता का दीप प्रज्वलित करें। क्रोध के स्थान पर शान्ति, ईर्ष्या के स्थान पर सहयोग, चिन्ता के स्थान पर ईश्वर पर विश्वास और घृणा-नफरत के स्थान पर आत्मिक स्नेह को स्थान दें, शक व अनुमान की दृष्टि को बदल स्पष्टता और स्वच्छता रखें, अंदर-बाहर सच्चाई व सफाई का व्यवहार रखें, सर्व के प्रति शुभभावना-शुभकामना देने का दृष्टिकोण बनाएं। यही आन्तरिक सफाई है।

नये वर्ष की योजना केवल आर्थिक और व्यावसायिक लाभ तक ही न रहे, बल्कि आत्मिक उन्नति, स्वस्थ जीवनशैली और परिवार में मधुर संबंध स्थापित करने पर भी ध्यान केन्द्रित हो। जीवन का वास्तविक लाभ तभी है जब हम स्वयं भी शान्त और सुखी रहें तथा दूसरों को भी सुख और शान्ति का अनुभव कराएं।

अंततः दीपावली हमें यह याद दिलाने आती है कि अंधकार चाहे कितना भी गहरा हो, एक छोटा-सा दीपक उसे मिटाने के लिए पर्याप्त है। उसी प्रकार, नकारात्मकता चाहे कितनी भी हो, यदि आत्मा परमात्मा से जुड़कर एक संकल्प ले ले, तो नया साल वाकई नया बन सकता है। यही परमात्मा का संदेश है कि आत्मिक दीपावली मनाओ और नये युग की ओर कदम बढ़ाओ।

मनमनाभव के मंत्र को यंत्र बना दो तो सफलता मिल जाएगी

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा कहते हैं बच्चे अभी समय बहुत नाजुक आने वाला है इसलिए अपने मन पर कन्ट्रोल जरूर होना चाहिए। सेकण्ड में मैं अपने मन को ऑर्डर करूं कि व्यर्थ खत्म हो जाए, समर्थ चले। तो एक सेकण्ड में हम अपने मन पर ऑर्डर कर सकें और उसी ऑर्डर के अनुसार एक सेकण्ड में हम व्यर्थ को फुलस्टॉप लगा सकें, इसकी प्रैक्टिस काम करते हुए भी होनी चाहिए। हमारा पेपर अचानक होना है और अचानक किस समय कैसे भी हो सकता है इसलिए हमारे मन पर हमारा कन्ट्रोल हो तो सेकण्ड में पास हो जाएंगे। अगर कन्ट्रोल नहीं है तो प्रयत्न करेंगे पास होने का लेकिन प्रयत्न में टाइम लग सकता है।

हमारा मूल मन्त्र है मन-मनाभव, मन अपने ऑर्डर में रहे और जहाँ लगाने चाहें वहाँ ही लगे, जितना समय लगाना चाहें वो ऑर्डर में रहे। ये है मन-मनाभव। बाबा कहते बच्चे इस मन-मनाभव के मंत्र को यंत्र बना दो तो सफलता मिल जाएगी। तो इस मंत्र को यंत्र मुआफिक सेकण्ड में मैं यूज़ कर सकूं ये प्रैक्टिस बहुत-बहुत जरूरी है। बाबा ने कहा था कई बच्चे कहते हैं कि वैसे तो ठीक हैं लेकिन जब कर्मयोगी बनते हैं तो डबल काम हो जाता है, उस समय हमारी प्रैक्टिस थोड़ी और होनी चाहिए। इसके लिए कर्मयोगी बनते समय सोचो कि मैं आत्मा करावनहार हूँ और यह कर्मेन्द्रियां करनहार हैं। तो जब अपनी सीट पर सेट होंगे, तो सीट पर बैठे हुए मालिक का सब ऑर्डर मानते हैं। अगर आपकी कर्मेन्द्रियां आपका कहना नहीं मानती हैं तो इससे सिद्ध है कि आप अपनी सीट पर सेट नहीं हैं। आपकी सीट है मैं मालिक हूँ, अधिकारी हूँ, मालिक को तो पॉवर होती है ना, ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ। ऑलमाइटी अथॉरिटी का बालक हूँ, इस सीट पर सेट होके फिर कर्मयोग के टाइम ट्रायल करो तो सहज हो जाएगा।

तो इस पर हमारा अटेन्शन होना चाहिए क्योंकि अचानक पेपर होना है तो कर्मयोग के टाइम भी हो सकता है। इसलिए बाबा अभी इसी प्वाइन्ट पर विशेष अटेन्शन खिंचवा रहा है। मेहनत तो हमको करनी पड़ेगी ना, सीट पर सेट हमको होना पड़ेगा इसलिए बाबा हमको कहता है बहुत समय का अभ्यास नहीं होगा तो उस समय हम उसको कन्ट्रोल कर नहीं सकेंगे।

जब आत्म-अभिमानी शब्द कहते हैं तो आत्मा के अभिमान कौन से हैं? बाबा जो हमें समय प्रति समय स्वमान बताते हैं, जैसे बाबा कहते हैं तुम विश्व परिवर्तक हो, हम आत्मा हैं लेकिन आत्मा के साथ-साथ हम ये स्वमान याद रखें, आत्मा तो लाइट है, लाइट रूप होकर हम चलते हैं लेकिन साथ में अगर स्वमान भी याद रहे तो देह अभिमान खत्म हो जाएगा। जैसे बाबा कहते हैं आप परमात्म दिलतख्त के मालिक हो, यह कितनी बड़ी बात है, अगर हम सोचें कि मैं आत्मा हूँ, आत्मा के साथ मैं कौन-सी आत्मा हूँ! तो हमारी आत्मा का अभिमान ये है कि जो बाबा स्वमान देते हैं उस स्वमान में स्थित रहें और स्वमान में स्थित रहने से बहुत रमणीक हो जाता है। जैसे मैं विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ, ये कितने मर्तबे की बात है। उस स्थिति में अगर हम स्थित रहें तो सारा दिन हम अलर्ट रहेंगे।

ऐसी स्थिति हो जो निंदा-स्तुति, मान-अपमान में समान रहें

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा की मुरली सुनने के बाद हमारा दिल कहता था कि बाबा से चिटचैट करें, बाबा भी कहता है मुरली के बाद आपस में मुरली रिवाइज़ करो क्योंकि तुरन्त रिवाइज़ करते हैं तो दिनभर याद रहती है। यह मुरली के बाद बाबा के पास बैठने से पता चलता था कि बाबा मुरली सुनाके कैसे न्यारा हो जाता है। पूछने पर कहता था कि कल्प पहले सुनाया था, फिर कल्प के बाद सुनाऊंगा। बच्ची, गोल्डन वर्सन्स नेवर रिपीट। अपने को कितना अच्छा शिक्षक मिला है, कितनी मीठी-मीठी बातें सुनाता है। अन्दाजा लगा के देखो, इतना प्यारा बाबा सारे कल्प में फिर नहीं मिलेगा।

रूखेपन का संस्कार भी बहुत खतरनाक है। रूखे रहेंगे, समझेंगे काम में बहुत बिज़ी हूँ या फिर अभिमान बिज़ी कर देता है। रूखेपन में कितना नुकसान है। तो रूखी रोटी खाके सूखा हो गया वो औरों को क्या सुखी करेगा! किसी भी गुण की वैल्यू बहुत है। बाबा ने ऐसा खज़ाना दिया है, जो आत्माएं बाबा के घर आकर माला-माल हो जाएं।

चार बातें हमारे अन्दर स्पष्ट हैं, जो बाबा कहते थे बच्चे ज्ञान ऐसा है जैसे अन्धे के आगे आइना। हो अन्धा, आइने के सामने आये तो दिखेगा कैसे! पर यह आइना ऐसा है जो अन्धा भी देख सकता है। ऐसा पॉवरफुल आइना हो जो दूसरों को कुछ कहे नहीं, अपने आप अपने को देखने लग पड़े, न सिर्फ देखने लगे, बनने लग पड़े। चार बातें हैं, भावी के साथ भाग्य, भगवान और समय। चारों का मेल है। भगवान ने बताया अभी तेरी यह भावी बनी पड़ी है। बाबा कितना अच्छा है सोचो तो सही। फिर बाबा कहेगा तू कितनी अच्छी हो। बाबा बाप कितने सुन्दर हो, सुन्दर इतना है जो हमें काले से सुन्दर बना देता है। सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। हम तो झूठे बन गए थे, बॉडी कॉन्सियस बन गए थे। आत्म-अभिमानी बनाकर ऐसा पकड़ा है जो पुराने स्वभाव-संस्कार से छूट गए।

तो भावी बनी पड़ी है, पर बनानी भी है, यह समझ दी है। ऐसे नहीं जो बना हुआ होगा। अभी यह टाइम है बनाने का। तो चारों में से महिमा किसकी ज्यादा करें? जिसने ज्यादा भक्ति की है वो पहले बाबा से मिलता है। फट से मिलता है। कर्म तो हमें गर्भ तक भी नहीं छोड़ते हैं। यहाँ से भल शरीर छोड़ा, पर गर्भ के बाहर भी निकलेगा तो उसी कर्म के अनुसार निकलेगा। बाबा ने समझाया है कि अभी कर्म का हिसाब-किताब खत्म करो, नहीं तो गर्भ तक भी हिसाब-किताब नहीं छोड़ेगा। सदाकाल का सुख, अविनाशी सुख जो बाबा दे रहा है वो सुख अपने आप सफलता पाने के लिए है। किसी के साथ द्वेष भाव रहने में कोई सफलता नहीं है। ऐसे नहीं कि जो हमारी प्रशंसा करे वो हमारा मित्र है और निन्दा करे वो शत्रु है, नहीं। निन्दा-स्तुति, हार-जीत में समान बनें, तब कहेंगे ज्ञान अन्दर गया है। ज्ञान है नॉलेज, योग है याद। ऐसी याद जिससे मान-अपमान, निंदा-स्तुति में समान रहें। जिसका नाम लो उसके अनुसार नैन, चैन हो जाएं यह कोई ज्ञान नहीं है।

हमारी ज़ीरो स्थिति ही हमें हीरो बनाती है

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हम बच्चे इतने पद्मापद्म भाग्यशाली हैं, जो हमारे कदम-कदम में पद्म हैं। स्वयं भगवान हमारे भाग्य का गायन करता है। तो सोचो हम कितने भाग्यवान हैं। अपने आपके भाग्य की स्वयं ही सराहना करो। अगर स्वयं अपना भाग्य देख हर्षित रहेंगे तो कभी गम नहीं आएगा। यह भी सोचो कि हमें भाग्यवान क्यों कहा? क्योंकि हम सभी हीरो-हीरोइन हैं। जो ड्रामा में हीरो-हीरोइन पार्टधारी होते हैं, उनके ऊपर ड्रामा के डायरेक्टर का विशेष अटेन्शन होता है। उनकी वैल्यू को भी जानते हैं, क्योंकि सारे फिल्म की आकर्षण हीरो-हीरोइन पार्टधारी पर होती है। उन्हें सब बातों की एक्टिंग करनी आती है। राजा का भी पार्ट एक्यूरेट बजाएगा तो दास-दासी का भी पार्ट एक्यूरेट बजा लेगा। वह एक्टिव और ऑलराउण्ड होता।

हीरो पार्टधारी माना हर बात का अनुभवी, जानकार। तो हम-आप सभी सारे कल्प के अंदर हीरो-हीरोइन हैं। संगम पर बाबा हमें इतना महान बनाता है, एक्टिव बनाता है जो सारे कल्प में हम महान रहते हैं। अभी हम सर्व सम्बन्ध एक बाप से जोड़ते, बाप की सारी नॉलेज को स्वयं में धारण करते, बाप के समान बनते हैं, यह भी हम सभी का पार्ट है। जैसे बाप स्वयं ज़ीरो है, ऐसे हमें भी ज़ीरो बनाकर हीरो बनाता है। जैसे बाप वैसे हम बन जाते हैं। बाप समान निराकारी बनने का, फिर निराकार बाप को प्रत्यक्ष करने का भी हमारा पार्ट है। सर्विस करके बाप को प्रत्यक्ष करने का भी पार्ट है। स्वर्ग की नई राजधानी स्थापन करके सूर्यवंशी घराने की प्राइज़ लेने का भी पार्ट है। महाराजा-महारानी व रॉयल फैमिली की विजयी माला बनने का भी पार्ट है। फिर द्वापर से लेकर आपेही पूज्य, आपेही पुजारी बनने का पार्ट है। फिर अन्त में सारी नॉलेज को धारण करके मास्टर नॉलेजफुल बनने का भी हमारा पार्ट है। ऐसे हैं हम हीरो पार्टधारी।

इस ड्रामा में आदि से अन्त तक हम हीरो हैं। संगम पर हमें बाबा लाइट का ताज देता, शक्तियों की माइट का भी ताज देता। हम आधाकल्प डबल ताजधारी रहते हैं। इस समय हम गरीब निवाज़ बाबा के बच्चे हैं। लेकिन हम हैं डबल ताजधारी। दुनिया वाले चिंताओं में रहते, और हम ज्ञान रत्नों से भरपूर होकर खुशियों के गीत गाते। तो क्या आप सब अपने को ऐसा हीरो समझते हो? वैसे भी हीरे का दाम बहुत होता है। हीरो बनना है तो अपनी स्थिति ज़ीरो बनाओ। तो एक तो हम सच्चे हीरो अर्थात् डायमण्ड हैं, दूसरा हम हीरो पार्टधारी हैं। जिस घड़ी जो पार्ट है- उसे एक्यूरेट बजाओ। आकर्षण वाला बजाओ। लेकिन पार्ट बजाते भी साक्षी रहो। साक्षी दृष्टा होकर पार्ट बजाने का बैलेन्स रखो। सारी नॉलेज को ऐसा ग्रहण कर लो जैसे कहते हैं चिड़ियों ने सागर को हप किया। जो सारी नॉलेज को हप कर नॉलेजफुल बनता उसे किसी भी बात में शंका नहीं होती। ज्ञान सागर बाबा हमें रोज़ नई प्वाइंट्स सुनाकर खज़ाने से भरपूर करता है।

हम सबका प्यार नॉलेज से, पढ़ाई से हो। जिसका पढ़ाई से प्यार है, उसका विचार सागर मंथन भी चलता है। उसे नशा रहता है कि हम कितने बड़े जौहरी हैं। बड़े से बड़े हीरे भी हमारे पास हैं तो छोटे से छोटे हीरे भी हमारे पास हैं। कोई भी हमारे पास आये तो हम उसे ज्ञान रत्नों की ज्वैलरी पहना सकते हैं। जिसके पास सच्चे हीरों की ज्वैलरी होगी उसकी झूठे हीरों पर नज़र नहीं जा सकती। इसलिए बाबा कहते दुनिया की झूठी जवाहरात को, अथवा बातों को देखते भी नहीं देखो, सुनते भी नहीं सुनो। क्योंकि हमें सच्चे जवाहरात मिल गए। बाबा ने हमें जवाहरात से सजाया है। ज्ञान रत्नों की ज्वैलरी से हमें खूब सजाया है। हमें सर्वशक्तिवान् बाबा ने सर्वशक्तियां दी हैं। सबसे बड़ी शक्ति हमें बाबा ने प्रेम की दी है। एक बाप के सब बच्चे हैं इसी एक दृष्टा ने हमें प्रेम की मूर्त बनाया है। दुश्मन को भी दोस्त बना दिया है।

ब्राह्मण अर्थात् बी.के. कभी यह नहीं कह सकते कि यह मेरा दुश्मन है। दुनिया की भाषा में है कि यह विपक्ष का है, हमारी भाषा में न पक्षपात है, न दुश्मनी है। दुनिया विनाश के साधन बनाने वालों को दुश्मन समझती लेकिन कल्याणकारी बाबा कहते कि ड्रामा के अन्दर जो कुछ बना है यह सब कल्याणकारी है। भल लोग बाबा की ग्लानी करते, बाबा समझानी देगा लेकिन फिर कहेगा यह भी ड्रामा। तो हमारी दृष्टि सबके लिए कितनी प्रेम भरी, रहम भरी चाहिए।